मेराजे इन्सानियत इमाम मुहम्मद तक़ी[अ०] व इमाम अली नक़ी[अ०] की सीरत की रौशनी में

आयतुल्लाहिलउज़्मा सैय्यिदुलउलमा सै० अली नक़ी नक़वी ताबा सराह

इमाम मुहम्मद तक़ी[अ०]

नामः मुहम्मद, लक़बः तक़ी और जवाद, कुन्नियतः अबुजाफ़र, विलादतः 10 रजब 195[हि०], वफ़ातः 29 ज़ीक़ादा 220[हि०] मक़ामः बग़दाद, मज़ार मुबारकः काज़मैन (इराक़)

आप पाँचवें बरस में थे जब आपके वालिदे बुज़ुर्गवार इमाम रिज़ा[अ०] सलतनते अब्बासिया के वली अहद हो गए इसके माने ये हैं कि सिने तमीज़ पर पहुँचने के बाद ही आपने आँख खोलकर वह माहौल देखा जिसमें अगर चाहते तो ऐशो आराम में कोई कमी न रहती माल व दौलत क़दमों से लगा हुआ था और तुज़्को एहतेशाम आँखों के सामने था फिर बाप की जुदाई भी थी क्योंकि इमाम रिज़ा[अ०] ख़ुरासान में थे और मुताल्लिक़ीन तमाम मदीना मुनव्वरा में थे। और फिर आप का आठवां ही बरस था कि इमाम रिज़ा[अ०] ने दुनिया ही से मुफ़ारेक़त फ़रमाई।

ये वह मंज़िल है कि जहाँ हमारे तारीख़ी कारख़ाना-ए-तख़ैय्युल और तौजीह की तमाम दूरबीनें बेकार हो जाती हैं। किसी दुनियवी मकतब और दर्सगाह में तो न उनके आबाओ अजदाद कभी गए न ये जाते नज़र आते हैं। हाँ एक मासूम के लिए मासूम बुज़ुर्गों की तालीम व तरबियत नाक़ाबिले इनकार है मगर यहाँ मासूम बाप से चार पाँच बरस की उम्र में जुदाई हो गई। एक तवारुसे सिफ़ात रह जाता है मगर हर एक जानता है कि इससे सलाहियत का हुसूल होता है, फेलियत के लिए फिर अस्बाबे ज़ाहिरी की ज़रूरत है। मगर ये तारीख़ी वाक़िआ है कि इमाम मुहम्मद तक़ी[अ०] ने बचपन की जितनी मंज़िलें इसके बाद तै कीं वह भी शबाब की सरहद तक भी न थीं कि आपकी सीरते बलन्द की मिसालें और इल्मी कमाल की तजल्लियाँ दुनिया की आँखों के सामने आ गईं। यहाँ तक कि इमाम रिज़ा[अ०] की वफ़ात के बाद ही शाही दरबार में अकाबिर उलमाए वक़्त से मुबाहेसा हुआ तो सबको आपकी अज़मत के सामने सरे तस्लीम ख़म करना पड़ा।

अब ये वाक़िआ कोई सिर्फ़ एतेक़ादी चीज़ भी नहीं है बल्कि मुसल्लमुस्सुबूत तौर पर तारीख़ का एक जुज़ है यहाँ तक कि इस मनाज़रे के बाद इसी महफिल में मामून ने अपनी लड़की उम्मुल फ़ज़ल को आपके अक़्द में दिया।

ये सियासते ममलकत का एक नई क़िस्म का सुनहरा जाल था जिसमें इमाम मुहम्मद तक़ी[अ०] की कमसिनी को देखते हुए ख़लीफ़-ए-वक़्त को कामयाबी की पूरी तवक़्क़ो हो सकती थी।

जैसा कि मैंने अपने रिसाला ''नवें इमाम'' (प्रकाशकः इमामिया मिशन) में लिखा है।

''बनी उमय्या के बादशाहों को आले रसूल[स०] की ज़ात से इतना इख़्तेलाफ़ न था जितना उनके सिफ़ात से। वह हमेशा इसके दरपे रहते थे कि बलन्दि-ए-अख़लाक़ और मेराजे इन्सानियत का वह मरकज़ जो मदीने में क़ायम है और जो सलतनत के माद्दी इक़्तेदार के मुक़ाबले में एक मिसाली रूहानियत का मरकज़ बना हुआ है ये किसी तरह टूट जाए इसके लिए वह घबरा-घबरा कर मुख़्तलिफ तदबीरें करते थे। इमाम हुसैन[अ०] से बैअत करना इसी की एक शक्ल थी। और फिर इमामे रिज़ा[अ०] को वली-ए-अहद बनाना इसी का दूसरा तरीक़ा।

फ़क़्त ज़ाहिरी शक्ल में एक एक अन्दाज़ मुआनेदाना और दूसरे का तरीक़ा इरादतमन्दी के रूप में था मगर असल हक़ीक़त दोनों बातों की एक थी। जिस तरह इमाम हुसैन[अ०] ने बैअत न की तो वह शहीद कर डाले गए उसी तरह इमाम रिज़ा[अ०] वली अहद होने के बावजूद हुकूमत के माद्‌दी मक़ासिद के साथ न चल सके तो आपकी शमा-ए-हयात को ज़हर के ज़रिये से हमेशा के लिए ख़ामोश कर दिया गया।

अब मामून के नुक़त-ए-नज़र से ये मौक़ा इन्तिहाई क़ीमती था कि इमाम रिज़ा[अ०] का जानशीन आठ नौ बरस का एक बच्चा है जो तीन चार बरस पहले ही बाप से छुड़ा लिया जा चुका था हुकूमते वक़्त की सियासी सूझबूझ कह रही थी कि इस बच्चे को अपने तरीक़े पर लाना निहायत आसान है और इसके बाद वह मरकज़ जो हुकूमते वक़्त के ख़िलाफ़ साकिन और ख़ामोश मगर इन्तेहाई ख़तरनाक, क़ायम है हमेशा के लिए ख़त्म हो जायेगा।

मामून इमाम रिज़ा[अ०] की वली अहदी की मुहिम में अपनी नाकामी को मायूसी का सबब तसव्वुर नहीं करता था इसलिए कि इमाम रिज़ा[अ०] की ज़िन्दगी एक उसूल पर क़ायम रह चुकी थी इसमें तबदीली नहीं हुई तो ये ज़रूरी नहीं है कि इमाम मुहम्मद तक़ी[अ०] आठ बरस के सिन में ख़ानदाने शाही का जुज़ बना लिये जाएं तो वह भी बिल्कुल अपने बुज़ुर्गों के उसूले ज़िन्दगी पर बरक़रार रहें।

सिवा उन लोगों के जो उन मख़सूस अफ़राद के ख़ुदादाद कमालात को जानते थे उस वक़्त का हर शख़्स यक़ीनन मामून का हम ख़याल होगा। मगर हज़रत इमाम मुहम्मद तक़ी[अ०] ने अपने किरदार से साबित कर दिया कि जो हस्तियाँ आम जज़्बात की सतह से बालातर हैं और ये भी उसी क़ुदरती सांचे में ढले हुए हैं जिनके अफ़राद हमेशा मेराजे इन्सानियत की निशानदही करते आए हैं आपने शादी के बाद महले शाही में क़याम से इनकार फ़रमाया और बग़दाद में जब तक क़याम रहा आप एक अलाहेदा मकान किराये पर लेकर उसमें क़यामपज़ीर हुए और फिर एक साल के बाद ही मामून से हिजाज़ वापस जाने की इजाज़त ले ली। और उम्मुल फ़ज़्ल के साथ मदीना तशरीफ ले गए और इसके बाद हज़रत का काशाना घर की मलका के दुनियवी शहज़ादी होने बावजूद बैतुश्शरफ़े इमामत ही रहा। क़स्रे दुनिया न बन सका। डयोढ़ी का वही अन्दाज़ रहा जो इसके पहले था। न पहरेदार और न कोई ख़ास रोक-टोक। न तुज़्को एहतेशाम, न औक़ाते मुलाक़ात की हदबन्दी, न मुलाक़ातियों के साथ बर्ताव में कोई फ़र्क़। ज़्यादातर नश्स्ति मस्जिदे नबवी में रहती थी जहाँ मुसलमान हज़रत के वाज़ो नसीहत से फ़ायदा उठाते थे। रावियाने हदीस अहादीस दरयाफ़्त करते थे। तुल्लाबे इल्म मसाएल पूछते थे और इल्मी मुश्किलात को हल करते थे। चुनानचे शाही सियासत की शिकस्त का नतीजा ये था कि आख़िर आपका भी ज़हर से उसी तरह ख़ातमा किया गया जिस तरह आपके बुज़ुर्गों का इससे पहले किया जाता रहा था।

इमाम अली नक़ी[अ०]

नामः अली, लक़बः नक़ी, कुन्नियतः अबुलहसन, विलादतः 5 रजब 214[हि०], वफ़ातः 3 रजब 254[हि०], बमक़ामः सामरा और मज़ारः शहर सामरा (इराक़)

आपकी ज़िन्दगी में भी वही ख़ुसूसियतें मौजूद हैं जो आपके आबाओ अजदाद में थीं। आपको मुतवक्किल ने मदीने से बुलवाकर सामरे में नज़रबन्द किया और कई लोगों की निगरानी आप पर क़ायम की। मगर आपके अख़लाक़े हमीदा ने हर एक को मुतास्सिर किया। आपकी ख़ामोश ज़िन्दगी सही इस्लामी सीरत की अमली मिसाल थी और हमेशा उस मिशन की जो तबलीग़े दीन व शरीअत का था हिफ़ाज़त करते रहे।

ऐसे मौक़ों पर जब जज़्बाते इन्सानी या तो मरऊब होकर दूसरे का हम रंग हो जाए या मुशतइल होकर मरने मारने पर तैयार हो जाए ये ज़ब्ते नफ़्त मेराजे इन्सानियत का नमूना था कि न अपने जाद-ए-अमल को छोड़ा जाता था और न तसादुम की सूरत पैदा की जाती थी।

मुतवक्किल का दरबार जहाँ शराब का दौर चल रहा था उसमें इमाम की तलबी और जामे शराब का पेश

बक़िया.....पेज 14 पर

और किन सूरतों में पैग़ाम को निज़ाम की शक्ल में ढाला।

मुख़तलिफ़ वुजूहात की बिना पर जिनकी वज़ाहत इस बाब के इब्तेदाई सफ़हात में की जा चुकी है इमाम बाक़िर ने महसूस किया कि नज़रियात की तबलीग़ का सही वक़्त आ पहुँचा है। चुनानचे मुख़तलिफ़ तरीक़ों से उन्होंने नज़रियात की तबलीग़ की इब्तेदा कर दी।

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] ने मआरिफ़े इतरते अतहार को आम करने की ग़रज़ से एक अज़ीम दानिशगाह की बुनियाद रखी जहाँ दुनियाए इस्लाम की इल्मी हलके से इमाम के दर्स में सैकड़ों और हज़ारों की तादाद में मुमताज़ शख़सियतें हाज़िर होती थीं और इस मआरिफ़े इलाही के सरचश्मे से इक्तेसाबे फ़ैज़ करती थीं।

इस ख़ुर्शीदे इमामत से कस्बे फ़ैज़ करने में इस्लाम के तमाम फ़िरक़ों के लोग शामिल हैं और अहले सुन्नत के जय्यद उलमा में से कुछ हज़रात को इमाम बाक़िर की शार्गिदी पर फ़ख़्र है जिनमे ज़ोहरी, अता बिन जुरैह और क़ाज़ी हफ्स बिन ग़यास का नाम लिया जा सकता है।

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] के शार्गिदों ने हदीस तफ़सीर, फ़िक़्ह, कलाम और मआरिफ़े इस्लामी के तमाम शोबों को इल्मो इरफ़ान की दौलत से मालामाल कर दिया है और इन मैदानों में शीआी नुक़्त-ए-नज़र को मुदव्वन किया है। मिसाल के तौर पर अबान बिन तग़लब जो इल्मे क़राअते क़ुरआन और फ़िक़्हुल लुग़त में यकताए ज़माना थे। वह पहले शख़्स थे जिन्होंने क़ुरआन की मुश्किल ताबीरों की शरह किताबी सूरत में "ग़राएबुल क़ुरआन" के नाम से लिखी। अबुजाफ़र मुहम्मद बिन हसन, अबी सरह और इस्माईल बिन अब्दुर्रहमान अस्सौदी जैसे अफ़राद अपने ज़माने के अज़ीम तरीन मुफ़स्सिरीने में से थे और मुसलमानों के लिए इल्मे तफ़सीर के इरतेक़ा की सिम्त राहनुमा और संगेमील की हैसियत रखते थे। जाबिर बिन यज़ीद जोअ़फ़ी और यह्या बिन क़ासिम अबुबसीर असदी अज़ीम मुहद्दिसीन में से थे। मुहम्मद बिन मुस्लिम ने इमाम बाक़िर से तीस हज़ार हदीसें नक़ल की हैं। इल्मुल कलाम में अब्दुल्लाह बिन मैमून और ज़ुरारा बिन अअ़्युन ने इल्मे कलाम के शीआी नुक़्त-ए-नज़र को मुदव्वन किया। फ़िक़्ह में आमिर बिन मुआविया ज़हनी, सालिम बिन अबी हफ़्सा, अबु यूनुस कूफ़ी और यह्या बिन क़ासि अबु बसीर असदी जैसे अफ़राद ने शिया फ़िक़्ही निज़ाम की तदवीन के सिलसिले में अहम क़दम उठाए। ये सब के सब इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ०] की दर्सगाह के परवरदा थे। (किताब- उस्वहा-ए-जावेद से)

बक़िया....... इमाम मुहम्मद तक़ी(अ०) व इमाम अली नक़ी(अ०) की सीरत

किया जाना और आपके इनकार पर ये फ़रमाइश कि कुछ अशआर ही सुनाइये और आपको इस मौक़े से वाज़ के लिए गुन्जाइश निकालना और बेएतेबारि-ए-दुनिया और मुहासब-ए-नफ़्स की दावत पर मुशतमिल वह अशआर पढ़ना जिन्होंने इस महफिले ऐश को मजलिसे वाज़ में तबदील करके वह असर पैदा किया कि हाज़िरीन ज़ारो क़तार रोने लगे और बादशाह भी चीखें मार-मार कर गिरया करने लगा। ये उन्ही हज़रत ज़ैनुलआबेदीन[अ०] के वारिस का काम हो सकता था जिन्होंने दरबारे इब्ने ज़ियाद व यज़ीद में इज़हारे हक़ाएक़ के किसी मौक़े को कभी नज़रअन्दाज़ नहीं किया।

क़ैद के ज़माने में आप जहाँ भी रहे आपके मुसल्ले के सामने एक क़ब्र खुदी हुई तैयार रहती थी। ये ज़ालिम ताक़त को उसके बातिल मुतालब-ए-इताअत का एक ख़ामोश और अमली जवाब था यानी ज़्यादा से ज़्यादा तुम्हारे हाथ में जो है वह जान का ले लेना मगर जो मौत के लिए इतना तैयार हो वह ज़ालिम हुकूमत से डर कर बातिल के सामने सर क्यों ख़म करने लगा।

फिर भी मिस्ल अपने बुज़ुर्गों के हुकूमत के ख़िलाफ़ किसी साज़िश वग़ैरा से आपका दामन ऐसा बरी रहा कि बावजूद दारुस्सलतनत के अन्दर मुस्तक़िल क़याम और हुकूमत के सख़्त तरीन जासूसी निज़ाम के आपके ख़िलाफ़ कोई इल्ज़ाम कभी आएद नहीं किया जा सका हालांकि अब्बासी सलतनत अब कमज़ोर हो चुकी थी। और वह दम तोड़ने के क़रीब थी मगर आले मुहम्मद[अ०] न उन हुकूमतों को हमेशा अपनी मौत मरने के लिए छोड़ा। उनके ख़िलाफ़ कभी किसी इक़दाम की ज़रूरत महसूस नहीं फरमाई।